हिन्दी - विभाग

डॉ॰ कविता कुमारी सिंह

XI, विषय - गद्य खण्ड

'अर्द्धनारीश्वर' निबन्ध का भाव :—

अर्द्धनारीश्वर निबन्ध में रामधारी सिंह 'दिनकर' यह बताने का प्रयास किया है कि नर - नारी सब प्रकार से एक समान हैं। उनमें एक का गुण दूसरे के दोष नहीं कहा जा सकता। अर्थात

मंगलवार

नरों में नारियों के गुण आये तो इससे उनकी मर्यादा कम नहीं होती, बल्कि उनकी पू... में वृद्धि होती है। दिनकर को यह रूप संस... में कहीं देखने को नहीं मिलता है। इसलिए ... क्षुब्ध हैं। उनका मानना है कि कि संसार ... सर्वत्र पुरुष पुरुष है और स्त्री - स्त्री। ... कहते हैं कि नारी समझती है कि पुरुष ... गुण सीखने से उसके नारित्व में बट्टा ल... इसी प्रकार पुरुष समझता है कि स्त्रियों...

गुण अपनाकर वह स्त्रैण ही कहलायेगा। इस विभाजन से दिनकर दुखी हैं। यही नहीं, भारतीय समाज को जानने वाले तीन बड़े चिन्तक रवीन्द्रनाथ, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद के चिन्तन से भी दिनकर दुःखी हैं। दिनकर मानते हैं कि यदि ईश्वर ने आपस में धूप और चाँदनी का बँटवारा नहीं किया तो हम कौन होते हैं, आपसी गुणों को बाँटने वाले? वे नारी के पराधीनता का संक्षिप्त इतिहास बताते हुए यह कहते हैं कि पुरुष ने वर्चस्ववादी तरीके अपनाकर नारी को गुलाम बना लिया

है। जब मनुष्य ने ~~कृषि~~ व्यवस्था का आविष्कार किया, जिसके चलते नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिन्दगी दो टुकड़ों में बट गई। नारी पराधीन होकर अपने समस्त मूल्य भूल गई। वह अपने अस्तित्व की अधिकारिणी भी नहीं रही। उ यह लगने लगा कि मेरा अस्तित्व पुरुष होने तक है। समाज में भी नारी को भो समझकर उसका उपयोग शुरू किया।

वसुन्धरा भोगियों ने नारी को आनन्द की खान मानकर उसका जीभर उपयोग किया।

दिनकर ने यह कहने का प्रयास किया है कि नारीत्व शक्ति का प्रतीक है। जहाँ शक्ति है वहीं सजीवता विद्यमान रहती है। शक्ति के बिना पुरुष अपूर्ण है। अतः पुरुष में नारीत्व का गुण भी विराजमान रहना अति आवश्यक है। कोमलता, मधुरता, सहजता और भावुक होना ही स्त्रीत्व के गुण को धारण करने का गुण होता है यदि ये सारे गुण पुरुष में आ

जायें तो उससे उनकी मर्यादा क्षीण नहीं होती अपितु उनके व्यक्तित्व में पूर्णता आ जायेगी।

प्रकृति ने नारी और नर में कोई भेद भाव नहीं किया है। वरन् उसने दोनों को उसी प्रकार एक समान और एक ही पदार्थ से बनाया है, जिस प्रकार से किसी पदार्थ से एक ही साँचे में ढालकर दो

समान मूर्तियाँ बनायी गई हैं। अबला - सबला, स्वामी - सेवक, पति स्त्री - पुरुष के भेद अथवा वर्ग बनाये गये हैं, यह सब पुरुषप्रधान समाज की उपज है। उसने अपने आधिपत्य की स्थापना के लिए यह भेदभाव उत्पन्न किया है। अतः "अर्द्धनारीश्वर" केवल इसी का प्रतीक नहीं है कि नारी और नर जबतक अलग हैं, तबतक दोनों अधूरे हैं, बल्कि इस बात का भी कि हर पुरुष में नारीत्व की ज्योति जगे, बल्कि यह प्रक्रिया नारी

में भी पौरुष का स्पष्ट आभास हो।